ट्रैक्टर बाजार का बादशाह-महिन्द्रा

कुछ दशक पूर्व तक ट्रैक्टर की मांग लगभग आयात से पूरी होती थी। आज स्थिति बिल्कुल बदल चुकी है और भारत दुनिया में पहिएदार कृषि ट्रैक्टरों का सबसे बड़ा निर्माता है। हमारे बाद अमेरिका और चीन का स्थान है। मजबूत आरएंडडी और प्रासंगिक नवाचारों द्वारा संचालित, भारतीय ट्रैक्टर उद्योग भी इस क्षेत्र की वृद्धि को संचालित करते हुए, गुणवत्ता के वैश्विक स्तर के साथ महाद्वीपों में ग्राहकों को सेवा प्रदान करता है। भारत के विनिर्माण परिदृश्य को बनाने वाले 18 ट्रैक्टर ओईएम के साथ उपस्थित हैं। भारत में ट्रैक्टर का उत्पादन 2018-19 में 0.9 मिलियन यूनिट (निर्यात सहित) के तहत रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुंच गया, जिससे भारतीय ट्रैक्टर उद्योग सही मायने में आत्मनिर्भर बन गया।

हेमन्त सिक्का, अध्यक्ष
फार्मइक्विपमेंट सेक्टर, महिन्द्रा एंड महिन्द्रा, मुंबई

भारतीय कृषि क्षेत्र देश के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 18% है और यह सेक्टर वर्तमान में कुल रोजगार का लगभग 57 प्रतिशत प्रदान करता है। दूसरे शब्दों में, भारत दुनिया की सबसे बड़ी कृषि अर्थव्यवस्थाओं में से एक है और खेती पर मशीनीकरण भारतीय अर्थव्यवस्था के इस महत्वपूर्ण क्षेत्र के सतत और कुशल विकास की कुंजी है।

उत्पादन बढ़ाने के अलावा, कृषि यंत्रीकरण भी समय पर खेती, संसाधनों का इष्टतम उपयोग सुनिश्चित करता है, जबकि सभी इनपुट लागत कम करते हैं और समग्र बचत सुनिश्चित करते हैं। अनिवार्य रूप से, मशीनीकरण उच्च कृषि उत्पादकता में वृद्धि करता है, खेत की सुस्ती और फसल भूमि का बेहतर प्रबंधन करता है। कृषि में कृषि दक्षता और लाभ के मामले में ट्रैक्टर डिविजन प्रमुख शक्ति है। भारत ने इस कृषि शक्ति में तेजी से प्रगति देखी है। वास्तव में, पिछले 53 वर्षों में भारत में औसत कृषि बिजली की उपलब्धता 1960-61 में लगभग 0.30 किलोवाट प्रति हैक्टेयर से बढ़कर 2013-14 में लगभग 2.02 किलोवाट प्रति हेक्टेयर हो गई।

कृषि यंत्रीकरण से आर्थिक और सामाजिक लाभ - कृषि यंत्रीकरण की पहचान वैश्विक स्तर पर कृषि उत्पादन को बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में की गई है। कई अध्ययनों से बढ़ी हुई उपज और कृषि मशीनीकरण के बीच सीधा संबंध है, जो किसानों के लिए कई अन्य आर्थिक और सामाजिक लाभों की ओर भी इशारा करता है। एक ट्रैक्टर से कृषि मशीनरी मूल्य में भूमि की तैयारी से बुवाई और कटाई के बाद का मशीनीकरण शामिल है। कृषि उपकरणों का उपयोग न केवल श्रम समय और फसल के बाद के नुकसान को कम करने में सक्षम है, बल्कि लंबी अवधि में उत्पादन लागत में कटौती करने में भी मदद करता है।

पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश आगे - दुनिया में भारतीय ट्रैक्टर बाजार अत्यधिक संगठित है। हालांकि, विकसित देशों की तुलना में भारत में मशीनीकरण का स्तर कम है। भारत के उत्तर में स्थित राज्य जैसे पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में क्षेत्र में अत्यधिक उत्पादक भूमि के साथ-साथ श्रम शक्ति की उपलब्धता में गिरावट के कारण उच्च स्तर का मशीनीकरण तेजी से बढ़ रहा है। इन राज्यों की सरकारों ने खेती के मशीनीकरण को बढ़ावा देने में समय पर सहायता प्रदान की है। देश में पश्चिमी और दक्षिणी राज्यों के पास इन क्षेत्रों में प्रचलित छोटी भूमि जोत के साथ-साथ मशीनीकरण पिछड़ा हुआ है, क्योंकि इन होल्डिंग्स में अधिक बिखराव है। नतीजतन, कई मामलों में, मशीनीकरण गैर-आर्थिक रहा है।

छोटी जोत वाले किसान पीछे - व्यापक नज़र से देखें तो भारत में 85 प्रतिशत से अधिक भारतीय किसान छोटे और सीमांत हैं, जिनके पास दो हैक्टेयर से भी कम भूमि है, लेकिन उनके पास कुल फसल क्षेत्र का सिर्फ 47.3% हिस्सा है। ये छोटे किसान लागत, कम उपज और आय के मुद्दों के कारण इन मशीनीकरण तकनीकों को वहन करने में असमर्थ हैं। परिणामस्वरूप, भारतीय खेतों पर मशीनीकरण की कम समग्र दर है जबकि भारत में कृषि मशीनीकरण ने हाल के वर्षों में मजबूत प्रगति की है, अभी भी एक लंबा रास्ता तय करना है। भारतीय कृषि क्षेत्र अभी भी पिछड़ हुआ है और उसे कृषि उपकरणों में वृद्धि की आवश्यकता है।

उपकरण उपयोग में भारत बहुत पीछे - वैश्विक दृष्टिकोण से ट्रैक्टर उद्योग की कीमत लगभग 60 अरब अमरीकी डॉलर है और फ़ार्म मशीनरी उद्योग की कीमत 100 अरब अमरीकी डॉलर है। इसके विपरीत, भारतीय ट्रैक्टर उद्योग लगभग 6 बिलियन अमरीकी डॉलर का है और कृषि मशीनरी उद्योग केवल एक अरब अमरीकी डॉलर का है। इन नंबरों को देखते हुए यह स्पष्ट है कि भारत ट्रैक्टाइज्ड है, लेकिन मैकेनाइज्ड नहीं है। कई अन्य कार्यों के लिए, सरल उपकरणों का उपयोग किया जाता है, या कार्य मैनुअल श्रम द्वारा किया जाता है।

कृषि यंत्रीकरण से समाधान - अब खेती और उपज की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए खेत का मशीनीकरण अनिवार्य है, यह अब उन प्रौद्योगिकियों को लाने का समय है जो छोटे और सीमांत किसानों के लिए अनुकूलित, सस्ती और सुलभ हैं। भारत में कृषि मशीनरी उद्योग मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में कम प्रौद्योगिकी वाले उपकरणों पर केंद्रित है। इसलिए ट्रैक्टर उद्योग, ड्राइविंग विनिर्माण विकास, प्रौद्योगिकी विकास, निर्यात, वित्त और रोजगार के क्षेत्र में आगे आने की बेहद जरूरत है। इस आशय के लिए केंद्र और राज्य सरकारों के साथ-साथ स्टार्ट-अप सहित कई निजी कंपनियां, देश के लिए जरूरत-आधारित, क्षेत्रीय रूप से कृषि मशीनरी और मशीनीकरण समाधानों के विकास की दिशा में काम कर रही हैं। इस वजह से मशीनीकरण आने वाले वर्षों में काफी हद तक बढ़ने की उम्मीद है।

छोटे किसानों को किराए पर उपलब्ध - अब आने वाले विशेष कृषि यंत्रों को सीएचसी (कस्टम हायरिंग सेंटर्स) के माध्यम से लोकप्रिय बनाया जा सकता है, जो कि किफायती है। छोटे और सीमांत किसानों के बीच कृषि उपकरणों की पहली जरूरत है। इससे भारतीय कृषि क्षेत्र और इससे किसानों को 'आत्मनिर्भर' बनाने में महत्वपूर्ण योगदान मिलता है।

किसानों के लिए कृषि फार्म मशीनरी एप लॉन्च - कृषि और किसान कृयाण मंत्रालय ने हाल ही में "CHC- फार्म मशीनरी" नामक एक बहुभाषी मोबाइल ऐप लॉन्च किया है। यह किसानों को उनके नजदीकी क्षेत्र में स्थित कस्टम हायरिंग सर्विस सेंटरों से जोड़कर मशीनीकरण की सुविधा प्रदान करता है।